



भारतीय प्राचीन संस्कार से संसार में शांति की स्थापना

डॉ अमिता जैन

सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग

जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं, नागौर

amitajainjuly1@gmail.com

सारांश-शान्ति और अशांति दोनों एक सिक्के के दो पहलू हैं। मन भावनाओं का धरातल है। मन को नियंत्रण में रखकर शांति का भाव रखा जा सकता है। शारीरिक क्रियाओं का नियंत्रण बुद्धि के द्वारा किया जा सकता है और मन की क्रियाओं का नियंत्रण संकल्प एवं अभ्यास से किया जा सकता है। यदि इन क्रियाओं का नियंत्रण समुचित ढंग से होता है तो मन के अंदर शांति रह सकती है। अच्छी वर्षा हो जाये तो किसान के मन में शान्ति का भाव होता है और कुम्भकार के मन में अशांति के भाव होते हैं। सकारात्मक गुण और ज्ञान चेतना का विस्तार शान्ति को बनाने में सहायक है।

शब्दावली- सकारात्मकता, संस्कार, चेतना, खुशी, शालीनता, अहिंसा, पंचशील

उद्देश्य—

- शांति के विचारों से अवगत कराना।
- शांति स्थापित करने के विविध पक्षों से ओतप्रोत कराना।
- पंचशील के सिद्धांतों की जानकारी प्रदान करना।

प्रस्तावना

शान्ति शब्द 'शम' धातु से बना है। शान्ति बाहरी और भीतरी दोनों की द्योतक होती है। भीतरी शान्ति ही आनन्द का प्रतीक होती है। शांति से तात्पर्य खुश, प्रसन्नचित्त और आनन्द में रहना। मन में बदले की भावना का अभाव होना। भारतीय प्राचीन ग्रन्थों, साहित्यों, महापुरुषों के प्रत्येक शब्द, वाक्य में शान्ति व अहिंसा के भाव संस्कारित रूप में परिलक्षित होते हैं। संस्कार और मूल्यों के क्षेत्र में हम अग्रणी हैं। अग्रिम पीढ़ी



को यही मूल्य देने का प्रयास करते हैं। शांति केवल अपने राष्ट्र तक सीमित करना नहीं है अपितु वैश्विकता और सार्वभौमिकता का समावेश करना है। शांति में निजी हितों को भूलाकर कल्याण के मार्ग पर चलना होता है। भिन्नता, मतभेद और विविधताओं को एकता में पिरोना। शिक्षण संस्थानों के द्वारा भारतीय प्राचीन संस्कार की शिक्षा देने पर संसार में शांति की स्थापना की जा सकती है। शिक्षण संस्थानों के सहयोग से विश्व में शांति स्थापित की जा सकती है। शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों के मध्य अंतर्संबंधों से मूल्यों का विकास किया जा सकता है। मूल्यों की गुणवृद्धि से समाज में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है और वह ऊर्जा समाज से देश में तथा देश से विश्व में प्रसारित की जा सकती है। जीवन में आने वाली छोटी-छोटी समस्याएं अशांति पैदा कर रही हैं। इन छोटी-छोटी समस्याओं को अब शिक्षण संस्थानों के प्रबंधक, प्राचार्य, शिक्षक तथा धर्मगुरुओं के माध्यम से दूर किया जा सकता है।

जब किसी के साथ प्रेम से लबालब भरे होते हैं तो आनंद की अनुभूति होती है। यदि पानी में डूबी हुई मछली पानी की तलाश करती है, जबकि पानी उसके पास स्थित है। उसी प्रकार स्वयं के पास शान्ति का भाव स्थित है और उसे ढूँढने मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, पहाड़ एवं गुफाओं में जा रहे हैं। रस में डूबा हुआ रसगुल्ला बाहर से और भीतर से पूरा रस में डूबा हुआ रहता है। वैसे ही शांति व्यक्ति को अंदर और बाहर दोनों तरफ से प्राप्त हो सकती है। सकारात्मक गुणों की अधिक मात्रा ही शांति को बढ़ाती है। जब कोई गलत काम करता है और उसे देखकर दूसरे लोग भी गलत काम करते हैं तो उसे चेतना स्तर की चोरी कहते हैं। चेतना स्तर की चोरी अशांति बढ़ा देती है। चित्त में उद्वेलन से कषाय के भाव उत्पन्न होते हैं, कषाय के भाव से स्पंदन की गति, स्पंदन की गति से अंतःसावी ग्रंथि प्रभावित होती है। अंतःसावी ग्रंथियों के प्रभाव से रसायन असंतुलन हो जाते हैं और रसायन असंतुलन होने पर शरीर कमजोर हो जाता है और रोगग्रस्त हो जाता है, रोगग्रस्तता से शरीर के अंदर अशांति पैदा होती है। भौतिक संसाधनों पर आश्रित, बाजार संसाधनों ने सुविधा भोगी बना दिया है। ये सभी भौतिकता की वस्तुएं अशांति को बढ़ाती हैं।

शान्ति स्थापना के अधोलिखित विचारों को अंगीकृत किया जा सकता है-

- **चेतना में सकारात्मकताका विस्तार-**चेतना में नफरत, कटुता, वैमनस्यता का विस्तार हो रहा है। दूसरों की कमी ढूँढने से हम कमजोर होंगे, दूसरों को अशांति पहुंचाने से ज्यादा हम हिंसक होंगे। दूसरों की नकारात्मक बातें बताने से हम समाज में निंदनीय बनेंगे, दूसरों की सकारात्मक बात बताने से हम सुंदर और सौम्य बनेंगे।
- **खुशी का भाव-**शान्ति स्थापित हेतु विश्व शांति दिवस 21 दिसंबर, 1981 से मनाया जाता है। इस दिन को सभी देश स्वतंत्रता, शान्ति और खुशी के रूप में मनाते हैं और सभी को शान्ति से जीवनयापन करने का संदेश देते हैं। उस समय से लेकर आज तक इस दिवस से शांति स्थापित करने में कितने सफल हुए हैं। हम 41 वर्षों में शांति के क्षेत्र में कितने आगे बढ़े हैं। लगता है विश्व के देश एक तरफ शांति की बात कर रहे हैं, दूसरी तरफ अशांति फैलाने वाले हथियारों को खरीद रहे हैं। इस विरोधाभास में शांति कैसे स्थापित होगी। अहिंसा व शांति का दिवस मनाने के लिए हमें हथियारों को बनाने, खरीदने तथा बेचने की प्रक्रिया को धीरे धीरे कम करना होगा। हथियारों के बढ़ने से कभी अहिंसक व शांति में जीवन नहीं हो सकता है। हर कार्यक्रम में शांति के विचार हेतु नवीन बातें हमें मिलती हैं, लेकिन वह कारागार सिद्ध नहीं हो रही हैं।
- **मंथरा जैसे लोगों से बचना-**किसी एक व्यक्ति से कहे हुए कठोर शब्दों को जब कुछ लोग चासनी या मक्खन लगा कर मंथरा की भांति दूसरों को प्रस्तुत करते हैं। वे लोग स्वयं बीमारी के शिकार होते हैं और दूसरों को भी बीमार कर देते हैं। ऐसे लोगों से बचना होगा।
- **वाणी की शालीनता-** महाभारत का युद्ध वाणी की अभद्रता के कारण हुआ। कभी किसी के द्वारा नकारात्मक शब्द या कोई कठोर वाक्य निकल गया, तो हमें प्रयास करना होगा कि उसे कैसे शांति व अहिंसा की बात से उनके विचारों को कम किया जा सकता है। किसी शिक्षक ने विद्यार्थी को डांट दिया, उसके साथी ने कहा कि आपसे शिक्षक ने ऐसा क्यों कहा? वह साथी के इस कथन को सुनकर और अशांति में होता जाता है। अतः शालीनता की वाणी से उसे समझा कर शांत करना चाहिए।



- **अहिंसा से शांति**-अहिंसा से शान्ति स्थापित की जा सकती है। अहिंसा और शान्ति में अंतर्संबंध है। अहिंसा जहां होगी, वहां शान्ति अवश्य होगी। शान्ति की खोज के लिए मनुष्य ध्यान,एकांत,पहाड़,जंगल,तपोवन आदि स्थानों पर जाता है। जबकि वह उसके भावों में समाहित है।
- **पंचशील का सिद्धांत**-संयुक्त राष्ट्र संघ का मुख्य लक्ष्य विश्व में शान्ति स्थापित करना है। युद्ध को रोकना और शान्ति की संस्कृति को बनाने का कार्य संयुक्त राष्ट्र संघ का है। शांति का संदेश देने के लिए विश्व के सभी देश कला,साहित्य,सिनेमा,संगीत और खेल हस्तियों का सहयोग लेते हैं। शान्ति स्थापित करने के लिए भारत ने पंचशील का सिद्धांत दिया। जो निम्न है-

1. एक दूसरे की प्रादेशिक प्रभुतासत्ता और अखंडता की रक्षा करना।
2. एक दूसरे पर आक्रमण नहीं करना।
3. एक दूसरे के आंतरिक विषयों में हस्तक्षेप नहीं करना।
4. समानता और परस्पर लाभ की नीति पालन नहीं करना।
5. शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की नीति में विश्वास करना।

सफेद कबूतर उड़ाकर विश्व में शान्ति का संदेश दिया जाता है। मनुष्य और प्रकृति का संबंध सहजीवन है। मनुष्य जीवन के रहस्यों को जानने, समझने और उजागर करने का प्रयास शिक्षा करती है। शिक्षा और संस्कार के माध्यम से मनुष्य शांति बनाये रख सकता है।

अशांति का कारण

आज 1/4 आबादी हिंसा, टकराव तथा अशांति में जीवन जी रही है। पिछले वर्ष 8 करोड़ 40 लाख लोगों को हिंसा,संघर्ष और मानवाधिकार उल्लंघन के चलते विस्थापित होना पड़ा। वातावरण में नेगेटिव विचार एवं सोच का होना, वाणी में अभद्रता, आलोचना, डांटफटकार, बुराई, चुगली, अपमान, उपहास आदि तथा ईर्ष्या,घृणा, क्रोध, संवेगों का बढ़ना, लड़ाई, कलह, वैमनस्य से भरा जीवन। अमीर-गरीब की खाई, दुनिया के राष्ट्रों की कथनी और करनी में अंतर, अंतर्विरोधी विचारधारा, क्षेत्रीयवाद, जातिवाद आदि अशांति फैलाते हैं।



बात शान्ति की करते हैं और तैयारी युद्ध की करते हैं। दुनिया में शांति मृगमरीचिका जैसी बनी हुई है। आज दुनिया के अफगानिस्तान, म्यांमार, इथोपिया, मध्य-पूर्व आदि 27 देश आज भी जातीय टकराव, हिंसा, युद्ध, गृहयुद्ध, जैसी स्थिति से ग्रस्त हैं। ज्ञानेंद्रियों का उचित उपयोग हो। आंख, कान, नाक, जिह्वा, त्वचा प्राप्यकारी है। आंख एवं कान कामी इंद्रिया है। नाक, जिह्वा, त्वचा भोगी इंद्रिया है। ये इस प्रकार कषाय का कार्य करती हैं तो अशांति का भाव आता है।

उपाय-

शांति को बनाने के लिए पांच तरीकों को अपनाना चाहिए- ध्यान साधना, भाव साधना, विचार साधना, संवाद साधना, सृजन साधना। सकारात्मक सोच, संस्कार, मूल्य और हैप्पीनेस से शांति का माहौल बनाया जा सकता है। शिक्षण संस्थान में कोई कर्मचारी तथा विद्यार्थी किसी भी नकारात्मक समस्या का समाधान शालीनता, सकारात्मक सोच तथा मधुर व्यवहार से करने का संकल्प लेता है तो शान्ति विकसित की जा सकती है। पहले बच्चे परिवार के माहौल से बहुत कुछ सीखते थे, लेकिन अब वे टी.वी., मोबाइल, सोशल मीडिया से सीख रहे हैं। ऐसे में उनकी सोच को शिक्षण संस्था भारतीय संस्कार से परिवर्तित कर सकती है। अहिंसा व शांति को महत्वपूर्ण बनाने के लिए संस्थानों में मेडिटेशन तथा नकारात्मक बात करने वाले पर रोक लगानी होगी। किसी सामान्य बात को विस्तार से, रोचकता से प्रस्तुत करने वाले घातक लोगों से बचना होगा।

निष्कर्ष

भारतीय प्राचीन संस्कारों से संसार में शान्ति को प्रसारित किया जा सकता है। क्योंकि भारतीय संस्कृति के संस्कार अहिंसा, सत्य, सहिष्णुता, सदाचार, अपरिग्रह, क्षमा आदि मूल्यों से जुड़े हुए हैं। यहाँ के संस्कार 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' 'परो वेति गणना' की भावना से ओतप्रेत हैं। स्वयं खुश रहे, दूसरे को खुश रखे



और सम्पूर्ण वातावरण को भी आनन्दमय बनाकर रखने के पक्षधर है। भारत के संस्कारों का बीज ही संसार में बोना होगा। इसी भाव को ध्यान में रखकर विश्व शान्ति को बनाये रखा जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1. कोठारी, गुलाब (2016) मानस, शिक्षा और संस्कार, पत्रिका प्रकाशन, जयपुर
2. कोठारी, गुलाब (2016) मानस: संस्कृति और सभ्यता, पत्रिका प्रकाशन, जयपुर
3. आचार्य महाश्रमण (2014), आओ हम जीना सीखें, जैन विश्व भारती, लाडनू-341306
4. आचार्य महाश्रमण (2014), सुखी बनो, जैन विश्व भारती, लाडनू-341306
5. सिन्हा, अरविन्द (2006) आपका व्यक्तित्व आपकी सफलता, रामचन्द्र अग्रवाल जयपुर पब्लिशिंग हाउस, चौड़ा रास्ता, जयपुर-302003
6. ओशो (2005) शिक्षा में क्रांति, ताओ पब्लिशिंग, पुणे